प्रयासों से बढ़ी हिंदी की स्वीकार्यता : डॉ अख्तर

- सीएसआईआर-सीरी में विश्व हिंदी दिवस 2019 तथा एक-दिवसीय प्रशासनिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन

पिलानी (सीमा सन्देश)। सीएसआईआर-सीरी में आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ जमील अख्तर, मुख्य वैज्ञानिक ने की।

संस्थान के पुराने सभागार में आयोजित कार्यक्रम में डॉ प्रमोदकुमार खन्ना सहित संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अन्य सदस्य, वैज्ञानिक एवं अन्य सहकर्मी उपस्थित थे। डॉ जमील अख्तर ने सभी सहकर्मियों को विश्व हिंदी दिवस की बधाई दी। वहीं इस आयोजन की प्रासंगिकता व महत्व पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से सभी सहकर्मियों में न केवल भाषा के प्रति अपने दायित्व का अहसास होता है अपितु उसके प्रति सम्मान की भावना भी बढ़ती है। उन्होंने हिंदी के बढ़ते प्रभाव की चर्चा करते हुए कहा कि सरकारी व गैर-सरकारी प्रयासों के बल पर विश्व में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी है। उन्होंने इसके लिए विदेशों में रह रहे भारतवंसियों के योगदान की भी सराहना की। उन्होंने संस्थान में 'स्पीच टु टेक्स्ट' संबंधी शोधकार्य को रेखांकित करते हुए वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि हमें इस दिशा में अपने शोध कार्यों को आगे बढ़ाना होगा, ताकि जनमानस उससे अधिक लाभान्वित हो सके। अंत में उन्होंने कार्यशाला के आयोजन की प्रशंसा करते हुए उसकी सफलता की कामना की और सभी सहकर्मियों को पुन: विश्व हिंदी दिवस की बधाई दी।

इस अवसर पर सहकर्मियों को संबोधित करते हुए संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं मुख्य वैज्ञानिक डॉ पी के खन्ना ने कार्यशाला के आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यशाला के आयोजन, विषयों के चयन आदि के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी रमेश बौरा ने किया। उन्होंने सहकर्मियों को विश्व हिंदी दिवस और हिंदी दिवस का अंतर स्पष्ट करते हुए दोनों अवसरों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विश्व हिंदी दिवस मनाने की शुरुआत 10 जनवरी, 2006 से तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने की, जबकि विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 1975 से आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि देश-विदेश के हिंदी प्रेमी भी अपने-अपने स्तर पर हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दे रहे हैं। इस कार्य में उन प्रवासी भारतीयों का भी बहुत योगदान है जो वर्षों पूर्व काम-काज के लिए मलयेशिया, मॉरिशस, कंबोडिया, थाइलैंड, सूडान, जमैका, त्रिनिदाद-टोबैगो के अलावा दक्षिण अफ्रीकी देशों में गए और वहीं बस गए। उन्होंने अपने परिश्रम से वहाँ स्वयं को स्थापित किया।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र ध्वज, राष्ट्र गान व राष्ट्र भाषा प्रत्येक नागरिक के लिए अत्यंत सम्मान का विषय होते हैं तथा हमारा दायित्व है कि हम प्रत्येक स्थिति में इस बात का धॅयान रखें। इससे पूर्व उद्घाटन सत्र में महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी (सामान्य) ने सभी सहकर्मियों के समक्ष विश्व हिंदी दिवस के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संदेश पढ़ा। अंत में उन्होंने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस कार्यक्रम को मूर्तरूप देने और मार्गदर्शन के लिए निदेशक, सीएसआईआर-सीरी को तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी सहकर्मियों को धन्यवाद दिया।